



Rs. 5/-

# Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 1, January 2013





## Readers' Club Bulletin

### पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 1, January 2013

वर्ष 18, अंक 1, जनवरी 2013

**Editor / संपादक**

**Manas Ranjan Mahapatra**

मानस रंजन महापात्र

**Assistant Editor / सहायक संपादक**

**Dwijendra Kumar**

द्विजेन्द्र कुमार

**Production / उत्पादन**

**Narender Kumar**

नरेन्द्र कुमार

**Illustration / चित्रांकन**

**Young Girls from Ferozabad**

**फिरोजाबाद की युवा महिलाएं**

Printed and published by Satish Kumar on behalf of National Book Trust, India and printed at Pushpak Press Pvt. Ltd., 203-204 DSIDC Shed, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi-110 020, and published at National Book Trust, India, Nehru Bhawan, 5 Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070. Editor: Manas Ranjan Mahapatra.

Typeset at Deft Creations, H-44, Second Floor, South Extension, Part-1, New Delhi-110049.

## Contents/सूची

जादूगर प्रोफेसर	डा हरिकृष्ण देवसरे	2
Sukhdev	R. K. Tandon	6
Multitalented Artist	Roop N. Kabra	12
I saw a Dream	Divya Chauhan	15
हाथी	कविता विकास	15
चार बाल कविताएं	डा. जगदीशचंद्र शर्मा	16
Chickenitaz.....	R.K. Bharti	18
Look Before You Leap	Manas Ranjan Samal	20
हाजीपुर का केला	नमितेष भूषण	23
प्रकृति की गोद में धधकता द्वीप	डा. मंजू नायर	24
चिड़ी और चिड़ा	के. आर. शर्मा	29
जंगल का नया साल	कमलसिंह चौहान	31
एक और अनेक	अनन्या मोहन	31
पहेलियां	लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'	32

### Editorial Address / संपादकीय पता

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070  
E-Mail (ई-मेल) : nbtindia@ndb.vsnl.net.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

## Promoting Love for Books

An illustration workshop for the young was organised by National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India at Ferozabad on 8-9 December 2012 in collaboration with Brij Bhushan Memorial Society. Around sixty young girls participated in the workshop and drew coloured pictures for the text of this issue of the Bulletin.

The two-day workshop was conducted by Shri Durga Dutt Pandey, noted artist. A session on Book Review together with an exhibition of books for the young adults was also organised on the occasion. In the past, NCCL had organised a two-day Reading Festival in Firozabad in 2010 in which interactive sessions with authors, reading sessions and a creative writing workshop were held.

At Delhi, a seminar on "Holistic Development of Children: Face a Book" was organised in collaboration with the Centre for Child and Adolescent Well Being, Department of Socialwork, University of Delhi on 16 November 2012. The seminar was inaugurated in graceful presence of Prof. Sushma Batra, Head of the Department, Prof. Sanjay Bhatt, Hon. Director of Centre for Child and Adolescent Well Being, and Mr. M.A. Sikandar, Director NBT. They shared their views about the value of books and the vital role it plays in our life.

"Books have an abiding value and serve our need as a companion when one is lonely. One can catch up a good one and just relish its content. Even during the time of leisure, we pick up books and magazines and refresh ourselves with new ideas and thoughts," the speakers said. Dr. Ira Saxena, Dr. Harpreet Bhatia, Shri Somnath Dixit, Dr B.K. Tyagi, Ms Kusumlata Singh and Dwijendra Kumar conducted their respective sessions on the occasion.

On 17 November, 2012 a workshop on enacting a story on Premchand's masterpiece "Idgah" was organized at Project Concern International, India's Shelter's Home located in Bhango village of Mewat district in Haryana. The resource person was Mr. Hafiz Khan, a senior theatre expert from the panel of National School of Drama and TIE company. Along with the children from Shelter Home, children from adjacent villages also participated in this workshop.



## जादूगर प्रोफेसर

डा हरिकृष्ण देवसरे



पिछले अंक में आपने पढ़ा था कि प्रोफेसर और बच्चे शनि ग्रह पहुंच गए हैं।

वहां का जीवन एकदम विचित्र था। खुली छतों वाले मकानों में लोग बेखटके रहते थे। उनके साथ घूम रहे दुभाषिया मांगो ने बताया—

“हमारे लिए यहां के मौसम में खुला रहना आवश्यक है। यहां की हवा और पानी

से हमारा संपर्क हर समय रहना आवश्यक है।”

“तो क्या सूर्य की किरणें यहां नहीं आती?”

“आती हैं। यह जो प्रकाश रहता है, सूर्य के कारण ही है। पर यह हमारे ग्रह के चारों ओर के वलय से छन जाता है और फिर वायुमंडल में विद्यमान गैसों के बादलों से



नीले रंग में बदल जाता है। इस तरह यह प्रकाश हमारे लिए जीने का सहारा बन जाता है।" उसने यह भी बताया कि यहां दस घंटे की रातें होती हैं। यहां के निवासी दिन में अधिक से अधिक समय तक प्रकाश में रहने का प्रयास करते हैं जिससे रात आराम से बीत सके।

"आपके यहां सबसे बड़ा कौन है?" संजय ने पूछा।

"शनि महाराज!"

"शनि महाराज!" आपका मतलब शनि देवता से है?"

"आप ऐसा भी कह सकते हैं। वह अद्भुत शक्तियों वाले हैं। उन्हीं के द्वारा इस ग्रह का सारा काम संचालित होता है।"

"और प्रधानमंत्री।"

"वह रोज का काम देखते हैं।"

"एक बात और बताइए कि विज्ञान में आपने इतनी उन्नति कैसे कर ली?"

"हमारे यहां हजारों – लाखों सालों से यह विधा प्रचलित है। उसी में हम उन्नति करते जाते हैं।"

"क्या आप हमें अपने विज्ञान-केन्द्र दिखायेंगे?"

"नहीं! क्षमा करें। इसके लिए मुझे अनुमति नहीं है। अब जबकि मंगल ग्रह अपने को

शक्तिशाली बनाना चाहता है, हमारे यहां सुरक्षा बहुत कड़ी हो गई।"

काफी देर घूमने के बाद जब चलने की बात आई तो प्रोफेसर ने पूछा—"क्या हमारा यान आपके ग्रह के वलय पार करके अंतरिक्ष में जा सकेगा?"

"इसके बारे में हमारे अंतरिक्ष विशेषज्ञ ही बताएंगे। आइए अंतरिक्ष केन्द्र चलें।"

अंतरिक्ष केन्द्र के वैज्ञानिकों ने बताया कि शनि ग्रह का गुरुत्वाकर्षण अधिक होने के कारण, इस यान द्वारा वलय पार करने में बाधा आ सकती है। इसलिए हमें अपने किसी राकेट के सहारे इस यान को अंतरिक्ष में भेजना होगा। इसके लिए शीघ्र ही तैयारी भी कर ली गई।

कुछ ही देर में संकेत मिले कि यान तैयार है। प्रोफेसर डेविड और बच्चे अपने यान में बैठ गए। शनि का राकेट चला और उसी के साथ प्रोफेसर डेविड ने अपना यान चालू कर दिया। कुछ ही समय बाद वे बड़ी तेजी से एक के बाद एक वलय पार करते गए। अंतरिक्ष में पहुंचकर शनि का राकेट अलग हो गया।

"अंकल, अब घर चलिए।" सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा।

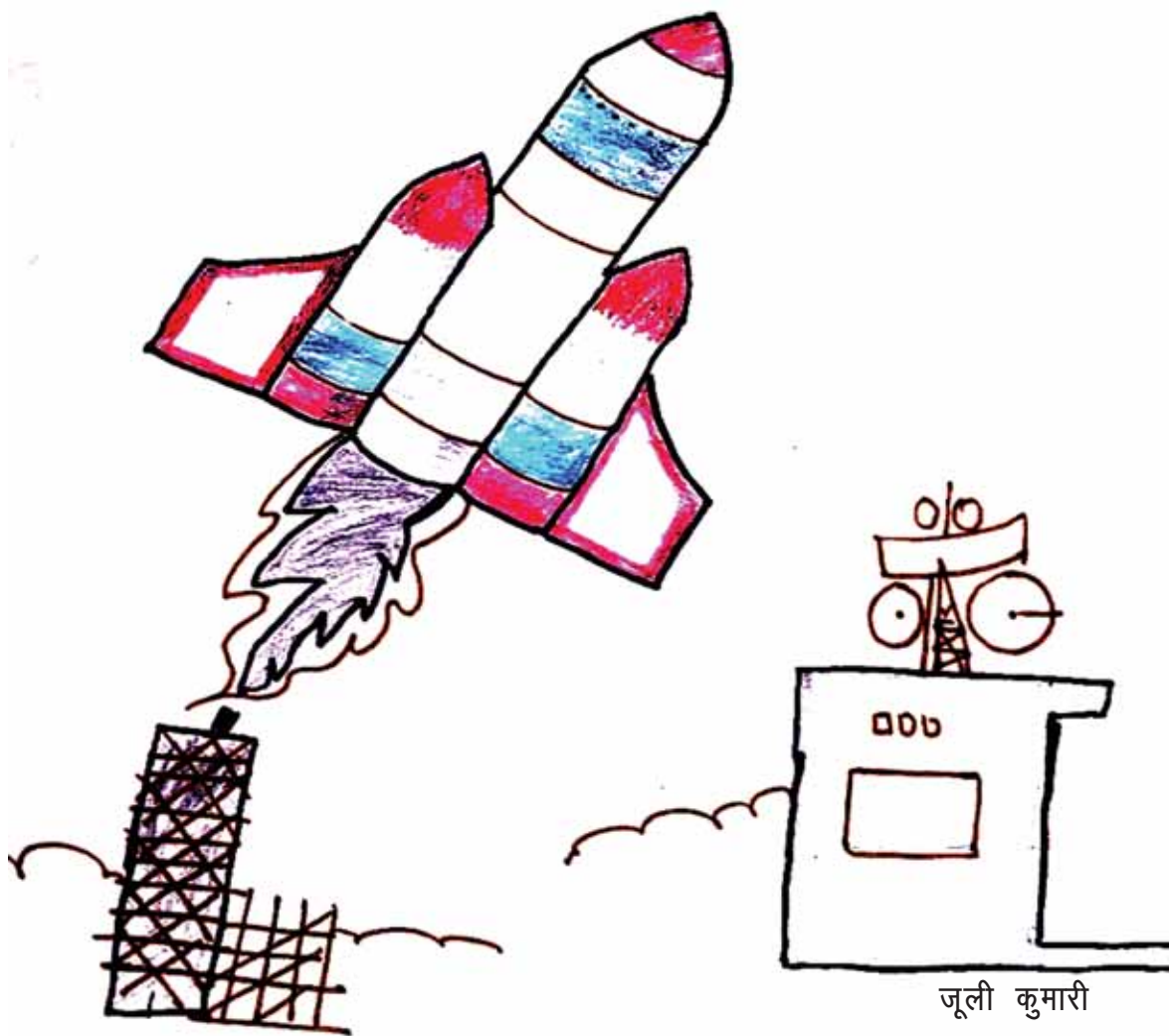
“ठीक है। अब घर चलते हैं।” हंसते हुए प्रोफेसर ने कहा।

“अंकल, डा. बर्नार्ड की डायरी तो सुरक्षित है ना”।

“हां”। प्रोफेसर ने जेब टटोलकर कहा —“मेरा विचार है इस यात्रा की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।”

“हां। इसमें बहुत से वे रहस्य हो सकते हैं जो शनि वालों ने हमसे छिपाए हैं। अच्छा हुआ, उन्हें इसका पता नहीं लगा।” प्रोफेसर ने कहा।

अचानक शशि चीखी —“अंकल, वो देखिए, आग उगलता हुआ अंतरिक्ष यान, इसे तो मैंने शनि के अंतरिक्ष केन्द्र में देखा था।”



“ओह। इसका अर्थ है कि डायरी की बात उन्हें पता चल गई है। तभी वे हमें नष्ट करने आ रहे हैं।” प्रोफेसर ने कहा।

“क्या,” बच्चों ने घबराए स्वर में कहा।  
प्रोफेसर ने यान के मीटरों को देखते हुए कहा—“घबराओ नहीं।

यान अभी काफी दूर है। हमें तुरंत उनके अंतरिक्ष क्षेत्र से बाहर होना है।

इसके बाद वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।”

प्रोफेसर ने यान की गति बढ़ा दी। शनि का आग उगलता यान बराबर तेजी से बढ़ रहा था। उसकी चमक इतनी तेज थी कि लगता था मानो वह बिल्कुल पास आ गया है। घबराहट से बच्चों का बुरा हाल था।

प्रोफेसर पूरे धैर्य से अपना यान बढ़ा रहे थे। अचानक लगा कि शनि का यान निकट आ गया है। बच्चे बड़ी जोर से चीखे ‘उसी क्षण यान ने जोर का धमाका किया जैसे कोई विशाल बम अंतरिक्ष में फूटा हो। चारों ओर अंगारे बिखर गए। किंतु प्रोफेसर अपना यान शनि के अंतरिक्ष से बहुत दूर निकाल लाए थे। शनि के यान के सारे प्रयत्न बेकार

गए। प्रोफेसर अभी भी तेजी से यान चला रहे थे। कुछ ही क्षणों बाद वह यान अंधेरे में गायब हो गया।

अब बच्चों और प्रोफेसर ने चैन की सांस ली।

धीरे-धीरे बढ़ते हुए वे पृथ्वी के अंतरिक्ष क्षेत्र में आए और फिर अचानक उन्हें लगा कि वे प्रोफेसर डेविड के उसी कमरे में पहुंच गए हैं। कमरे में प्रकाश हो गया। प्रोफेसर डेविड मुस्करा रहे थे।

“कहो कैसी रही यह यात्रा?”

“बेहद रोमांचक, बहुत मजेदार।” बच्चों ने कहा—“पर अंकल यह सब हुआ कैसे?”

“यह इस “टाइम मशीन” का चमत्कार है जिसे मैंने बनाया है। मेरा प्रयोग सफल रहा, इसकी मुझे बहुत प्रसन्नता है।”

“सच अंकल! आप महान हैं। आपको बधाई।” और बच्चों ने प्रोफेसर डेविड को धन्यवाद देकर अपने घर जाने के लिए विदा ली।

102, ब्रजविहार, पोस्ट चन्द्र नगर  
गाजियाबाद {उ. प्र.}

इस अंक के साथ डा. हरिकृष्ण देवसरे की यह धारावाहिक समाप्त होती है। अगले अंक से हम प्रस्तुत करेंगे डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी की नई हिन्दी धारावाहिक।

# Sukhdev

R. K. Tandon



In the history of India's revolution, Sukhdev has a special place. In the Lahore Conspiracy case he was declared accused along with Bhagat Singh and Rajguru and was later hanged with them. He believed that through armed revolution, the British could be driven out of the country and the Indians could be independent. For this purpose he devoted his whole life.

This great revolutionary and colleague of Bhagat Singh was born on 15 May 1907 in Lyallpur, Punjab (now in Pakistan). His father Ram Lal Thapar died three months before his birth. His uncle Lala Achint Ram brought him up. Another uncle of his, Lala Anant Ram was a national leader and at the time of Sukhdev's birth he was facing conviction



under the marshal law. Sukhdev's early education took place in Lyallpur. At the age of five he got admission in Arya High School. In 1922, he passed his High School exams. After that he went to Lahore for further studies. But his heart was somewhere else. He was a revolutionary and in Lahore he came into contact with another revolutionary, Bhagat Singh. Both were the students of D.A.V. College, Lahore. They joined hands with several other young men and formed a group, which later became an organization. Chandra Shekhar Azad, Jatindra Nath Das and Sachindra Nath Sanyal were the guiding forces behind the organization. This organization was very active in Punjab that made the British Government nervous and alert.

Both Sardar Bhagat Singh and Sukhdev formed *Naujawan Bharat Sabha* at Lahore. Its main objective was to give political education to young men so that the message of revolution travelled fast. Initially Bhagat Singh was its leader and later this work was given to Sukhdev. Sukhdev worked very well. He brought raw material from different sources for a bomb factory. At this time, he was only twenty years old.

Sukhdev loved Hindi language though it was not his mother tongue. He tried to learn it and later became a campaigner of Hindi. He used to teach Hindi to his friends and tried to explain its importance to them. In the revolutionary group, Sukhdev was called 'Villager', because he was a very simple man. His behaviour, his lifestyle and dressing sense were just like village-folk. He was an ordinary man with an extraordinary outlook.

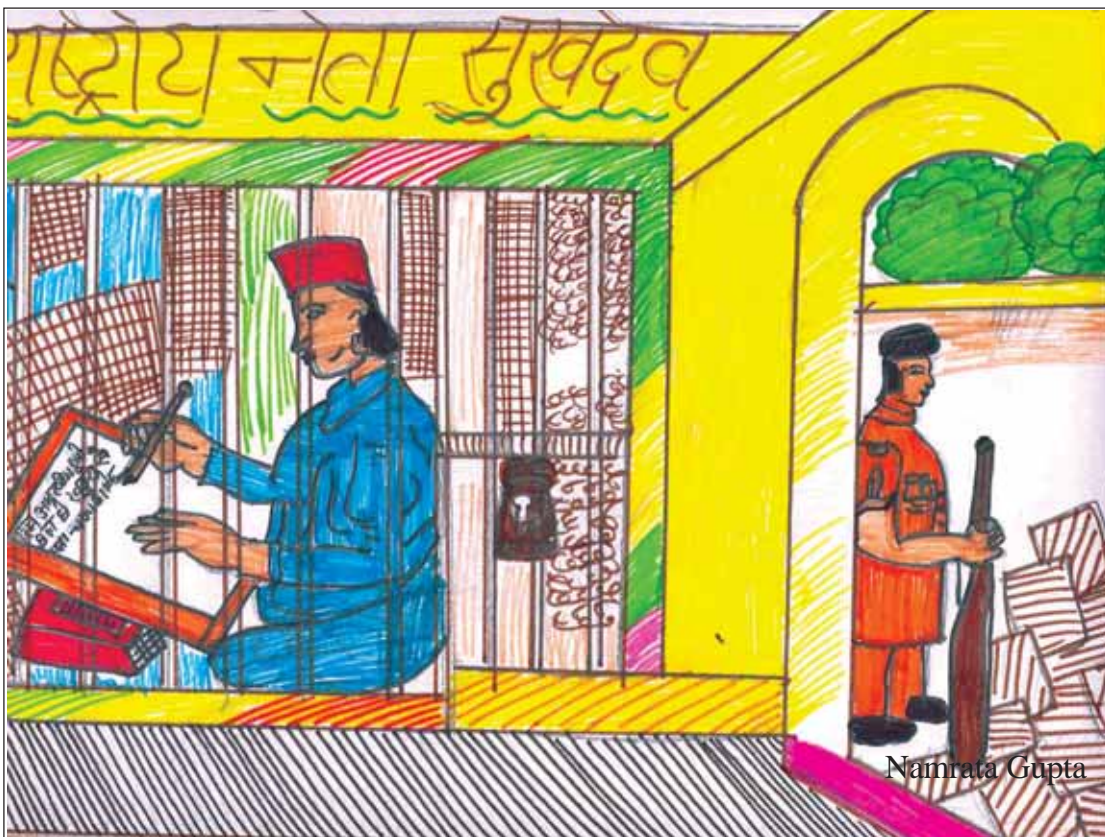
On one hand, he was a cheerful man and even small matters made him laugh heartily just like an innocent person. On the other hand, Sukhdev's silence was disturbing. It seemed that some severe pain inside his heart was hurting him emotionally and for hours together he used to ponder over something or the other. The smile on his face showed his contempt over social evils, conservatives and differences of political opinions. Sukhdev was one of the senior most leaders and an active member of the Hindustan Socialist Republican Association. He started study circles at the National College (Lahore) in order to delve into India's past as well as to scrutinize the finer aspects of the Russian Revolution.

Sukhdev was a devoted man. If he wanted to do something then nothing could change his decision. When he was a student and had no connection with the revolutionary party, he had got tattooed the word *Om* on his hand. But later, this symbol became a prominent identification and he wanted to remove it. In those days, in Agra, nitric acid was used for making bombs. Without telling anybody, he put a lot of acid on the tattooed-word *Om*. By the evening, he got plenty of burn marks at that place and he got fever but he did not disclose this to anybody and behaved normally as if nothing had happened. Chandra Shekhar Azad and Bhagat Singh were very angry with him, when they came to know about this incident. Laughingly, Sukhdev said, “the symbol of identification will be destroyed and I would be able to realize the capacity of acid.” After some time when the injury healed, some remains of the tattoo were still there on his hand. He decided to remove it also and for this he put a light candle below his hand to burn the skin. This caused him severe pain and injury.

Sukhdev was not present in the meeting of the Central Committee in

which it was decided to throw a bomb in the Delhi Assembly. Bhagat Singh pleaded that he should be sent for this mission but the members did not agree with him because the Punjab police was on his trail for the murder of Saunders. The Central Committee decided to send two other persons for this work. After two or three days when Sukhdev came to know about this, he vehemently protested the decision. He believed that only Bhagat Singh could explain the political philosophy of bomb throwing, if he was arrested. He discussed the matter with Bhagat Singh and asked him to execute the plan but when the Central Committee refused to give permission to Bhagat Singh he again discussed the matter with him. Looking at his adamant attitude, the Committee had to change its decision. Sukhdev left the same evening for Lahore without meeting anybody. Personally he had a great affection for Bhagat Singh but for the sake of idealism he had to sacrifice his dearest friend and in a way he was instrumental for sending Bhagat Singh to the jaws of death.

After the Assembly Bomb episode, Sukhdev and other members continued



Namrata Gupta

to do the party work. He established a bomb factory with the help of Yashpal and other colleagues. After some time the police located this bomb factory and Sukhdev was arrested.

Sukhdev also participated in the 1929 Prison Hunger Strike to protest against the inhuman treatment meted out to the inmates. During the period of trial, he was indifferent towards his case because he was not expecting justice from the enemy's court. On 23 March

1931, Sukhdev was hanged at Lahore jail along with his dear friends Bhagat Singh and Rajguru.

Sukhdev wrote a letter to Mahatma Gandhi just prior to his hanging, protesting against the latter's disapproval of revolutionary tactics. This letter throws light on the disparities between the two major schools of thought among the Indian freedom fighters. Gandhiji was negotiating with the Government for the

release of political prisoners not convicted of violence. On the other side, he was also appealing to the revolutionaries to stop their activities, as he believed that freedom could not be achieved through violence. The letter was published in 'Young India' on 23 April 1931, after the execution of Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev. The letter reads as.....

"Most Gracious Mahatma Ji, recent reports show that, since the successful termination of your peace negotiations, you have made several public appeals to the revolutionary workers to call off their movement at least for the present and give you a last chance to try your non-violent cult...The Congress is bound by its Lahore resolution to carry on the struggle relentlessly till the





complete Independence is achieved. In face of the resolution, the peace and compromise is nothing but a temporary truce which only means a little rest to organize better forces on a larger scale for the next struggle... as is evident from the very name—The Hindustan Socialist Republic Party—the revolutionaries stand for the establishment of the Socialist Republic which is not a half-way house. They are bound to carry on the struggle till their goal is achieved and their ideal consummated. But they would be quite apt to change their tactics according to the changing circumstances and environment.

Revolutionary struggle assumes different shapes at different times. It becomes sometimes open, sometimes purely agitational and sometimes a fierce life-and-death struggle. In the circumstances, there must be special factors, the consideration of which may prepare the revolutionaries to call off their movement... Since your compromise you have called off your movement and consequently all of your prisoners have been released. But, what about the revolutionary prisoners. Dozens of Ghadar Party prisoners imprisoned since 1915, are still rotting

in jails; in spite of having undergone the full terms of their imprisonment. Prisoners are buried in these living bombs, and so are dozens of Babbar Akali prisoners. Deogarh, Kakori, Machhua Bazar and Lahore Conspiracy Case prisoners are amongst those numerous who are still locked behind the bars. More than half a dozen conspiracy trials are going on at Lahore, Delhi, Chittagong, Bombay, Calcutta and elsewhere. Dozens of revolutionaries are absconding and amongst them are many females. More than half a dozen prisoners are actually waiting for the executions. What about all these people?

The three Lahore Conspiracy Case condemned prisoners, who have luckily come into prominence and who have acquired enormous public sympathy, do not form the bulk of the revolutionary party. Their fate is not the only consideration before the party. As a matter of fact the executions are expected to do greater good than the commutation of their sentences... Therefore we request you either to talk to some revolutionary leaders, or to stop these appeals... Hope you will kindly consider the above request and let your view be known publicly."

*"From the NBT Book  
Hanged for their Patriotism"*

# Multitalented Artist – Leonardo da Vinci

Roop N. Kabra



It may be leaves of a tree, hands of a man, rocks, starfilled sky, raining clouds or thundering lightning - he painted so nice and lively pictures of these that whosoever saw these felt dumbfounded. There was none equal to him in painting light and shade pictures. Famous portrait

of Mona Lisa and Jesus Christ's Last Supper are immortal creations of this multi-talented artist Leonardo da Vinci, painter of innumerable pictures of child's smile, groups of flying birds, different faces of men, old people, warriors, nerves inside the skin and

muscles etc. Leonardo da Vinci was not only a painter skilled architect, sculptor, engineer, draughtsman, astronomer, botanist, zoologist and anatomist etc. He was the first person to sketch out the inside of the brain on wax. He also to explained the functioning of heart and pupils of eyes as also. Why leaves are arranged in the branches in one particular way was also investigated by him.

He also thought differently compared to the great thinkers of the fifteenth century like Aristotle, He was a modern scientist of his period. Leonardo was very curious and he felt that nothing was beyond his minute observation and microscopic intellect.

He had explained even before Copernicus that the sun doesn't revolve round the earth and that the earth is also a planet like the moon. It was he who suggested for the first time that the study of the surface of the moon should be done with the help of a huge magnifying lense. Observing the lightning and the thunder, he concluded that light travels faster than sound.

He also succeeded in understanding the blood circulation system and thickening of arteries. He was the first

to find out that the annual rings in the stem of a tree can give us information about the age of the tree and also the annual details of humidity.

The praise of Leonardo's talents doesn't end here. Even much before the industrial revolution when there were no screws and screw drivers, he had invented ratchet, wrench, jack, kharad and even a crane which could lift a church. He was the first scientist to suggest that wind power can also give energy and made an air-conditioning machine and hygrometer.

This great artist who called wars "brutal frenzy" also worked in the army as engineer. He designed a double-walled cruiser so that when the outer cover is destroyed, the ship could float on the inner cover.

His study, experimentation, sketching, observation in the field of aerodynamics was original. He said, "Birds fly according to a mathematical rule and even men has this ability if they follow the birds".

He would open the doors of the cages allowing the birds to fly and studied their flight, rising steps and spreading of wings. His observation was so quick, keen and sharp that whatever he saw, he could draw exactly

the similar even if it were flying birds, running vehicles and horses.

He had thoroughly thought about the gliders, parachute and helicopter etc. Such a great, unique, talented painter, scientist, engineer, musician, architect and biologist, Leonardo da Vinci was born in 1452 in Florence, Italy near Vinci.

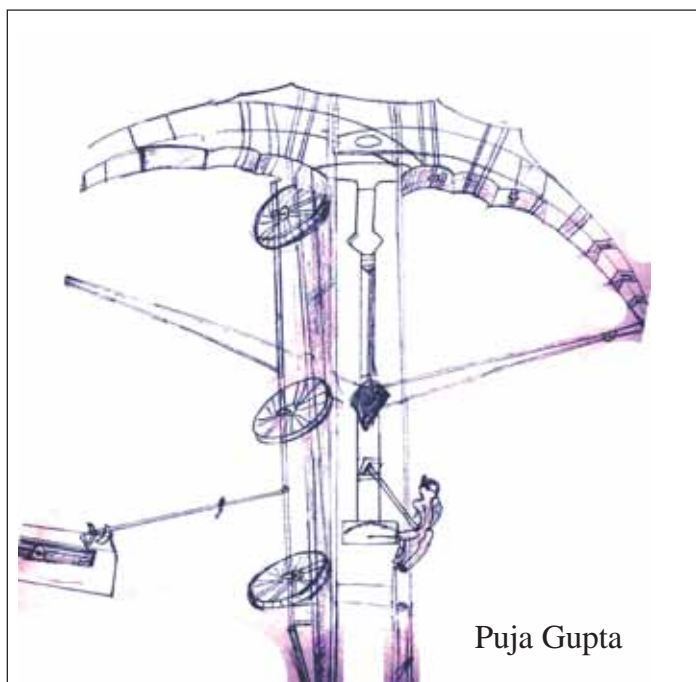
Right from childhood he was extraordinarily curious. He had a thirst to learn, know and find out the secret of everything. At the age of 15 years with training under the great master painter Verokkyo, he astonished him with his artistic and wonderful paintings.

He was a well-built and handsome person. He was a very good horse rider and an extempore poet. He sang his compositions on the musical instrument made by himself. At the age of 28 he had been recognized as the best painter of the period among the painting masters such as Michelangelo, Raphel and Battervali.

He was very impatient and cynical. He liked to keep away from

crowd. He was never satisfied with his work. He was so fast in planning new projects that the previous work remained incomplete. He used to say “I want to do miracle”. Later he repented that he had wasted lot of time. Six thousand pages written and sketched by him are still in Europe. He also learnt the art of reverse writing.

This most talented, wonderful man died at the age of 67. None else in the history matches with his great personality. No one like him has ever been born so far.



*A-438, Kishore Kutir, Vaishali Nagar  
Jaipur– 302021 (Rajasthan)*



## I saw a Dream

Divya Chauhan



Manu

I saw a dream...  
a dream which was never new  
I saw a dream  
a dream of being with you.

It was a bright sunny morning  
the sky was blue  
there was a silent cool breeze  
and just 'Me' and 'You' !

I saw a dream...  
a dream of us lying on the grass  
watching clouds, high above  
as the time passed

We were reading in the shade  
the birds were singing to us  
as together there we laid  
there was no one to fuss.

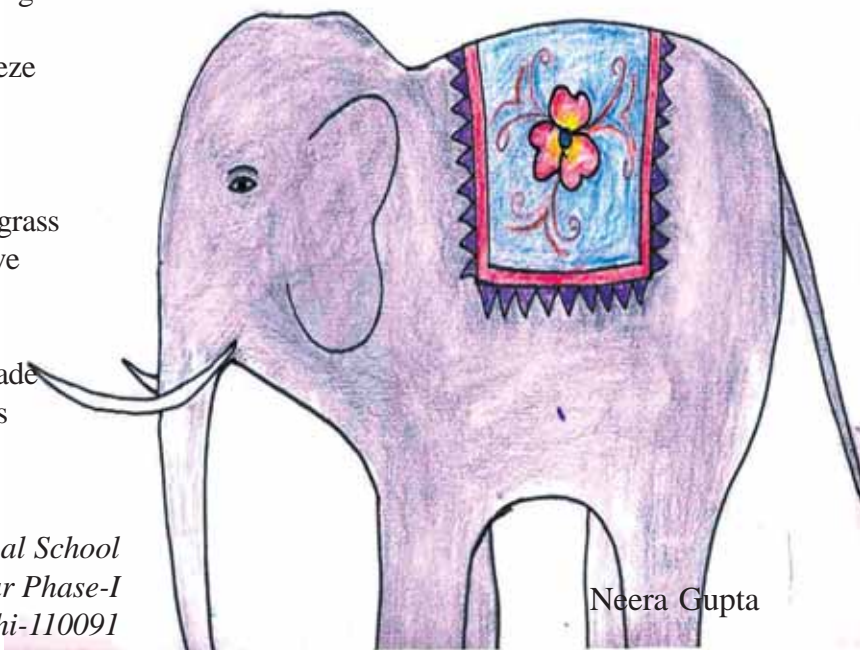
*Ahlcon International School  
Mayur Vihar Phase-I  
Delhi-110091*

## हाथी

कविता विकास

कितना सुन्दर, कितना प्यारा  
वनजीवन का न्यारा  
सबकी आंखों का तारा  
बच्चों का है वह यारा

मनमौजी है सीरत  
लंबे पंखे है कान  
हाथी ही है वह जीवधारी।  
सबसे अजूबा, पूर्णतः शाकाहारी ।



Neera Gupta

# चार बाल कविताएं

डा. जगदीशचंद्र शर्मा

## कथनी-करनी



आकाश

भाषण देने लगा भेड़िया  
उसे मिल गया मंच  
इस चुनाव में उसे जीत कर  
बनना था सरपंच

जंगल की सेवा के उसने  
वादे किए अनेक  
सबने सोचा इसकी  
कथनी-करनी रही न नेक



संगीता तिवारी

## लम्बी दौड़

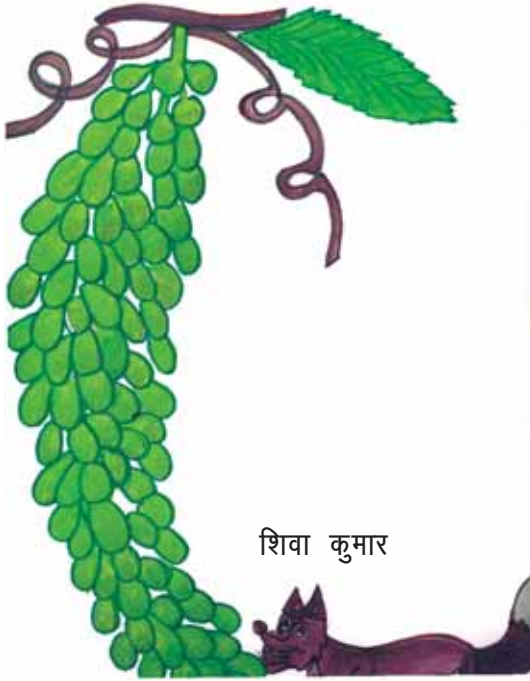
लगे दौड़ने एक साथ ही  
बंदर और सियार  
कौन दौड़ कर पहले पहुंचे  
जंगल के उस पार!

आगे जाकर घनी झाड़ियों  
का देखा अम्बार  
रूका सियार, कूदकर बंदर  
जा पहुंचा उस पार।



रजनी

## अंगूर



शिवा कुमार

कंचो-जैसे गोल-मटोल  
हरे-हरे मीठे अंगूर  
लेकर आए नई बहार  
मिलते सभी जगह भरपूर

गुच्छों से गदराती बेल  
फल लगते कुछ ऊंचे दूर  
जहां लोमड़ी का अंदाज  
हुआ कभी का चकनाचूर ।

## सर्दी

ललक रहा है सर्दी का दोना  
कण-कण भी हो उठा सलोना

ज्योंही बिगुल बजा ठिठुरन का  
गूंज उठा है कोना-कोना

उगता हुआ सुनहला सूरज  
दिखता चमकीला मृग-छौना

ओस बनी है मोती-जैसी  
डाल रही है जादू टोना

फूलों के गुच्छे मुस्काए  
हलकी धूप, लग रही सोना

बांस-बराबर लम्बी रातें  
तिनके-जैसा दिन है बोना ।



नीतू सिंह

संपादक 'बुलंद बनास'  
पो. गिलुंड-313207 (राजस्थान)

# Chickenitaz : Centre of Maya Civilisation

R.K. Bharti



Between the 3<sup>rd</sup> and 9<sup>th</sup> centuries A.D., the Mayas built some pyramids all across eastern Mexico and into modern Belize, Guatemala, Honduras, and El Salvador. Made of stone blocks held together with strong lime mortar, Mayan pyramids were built at steeper angles than Egyptian ones. The staircases sometimes got narrower as they rose,

to make the pyramids seem even taller and steeper. This also drew attention to the rituals performed in the temple chamber at the top. Crowds gathered at the base, but only priests could climb to the sacred heights.

The Mayas were skilled astronomers and laid out their pyramids according to the sun, moon, and stars. They also



developed yearly and sacred calendars, a system of mathematics, and their own language of picture-writing or “glyphs”. This has still not been fully deciphered.

### **City Kigdom**

The Maya did not have a single capital or king. Instead each city governed itself under its own ruler. One important later city was Chichen Itza in the Yucatan Peninsula. There were many major religious and administrative buildings there, including the famous pyramid EI Castillo. The stone pillars in the architecture show the influence of the Toltecs, a neighbouring culture.

Over 1,000 years ago, this was the centre of largest Maya civilization. Chichen Itza rose to prominent Mayan city but strangely, the people abandoned the city suddenly. There was never a Mayan kingdom and wars were constantly being fought between the cities. This may have played a part in the downfall of the civilization. But the Maya are still around. About nine million of them live in central America and 31 Maya languages are spoken.

The pyramid of Kukulkan, located at the centre of Chichen Itza, is one of the greatest Mayan structures. Originally each side had 91 steps and with the addition of the platform at the top, there are 365 steps, one for each day of the year. The stone steps are not so steep, but the optical illusion of a vertical climb is legendary.

At mid-afternoon on the days of the spring and autumn equinoxes, the shadow that covers the northeast angle of the pyramid is reflected on the stairway and forms triangles of light and shade that look like the movement of a serpent. This effect is more impressive because it touches a large head of Kukulkan i.e. feathered serpent at the bottom of the stairway, making it appear as if the serpent was descending from the pyramid. Such an effect could only be obtained by precise architectural and astronomical measurements.

In the Temple of the Red Jaguar, archaeologists discovered the Throne of the Jaguar, which may have been a throne for the high priest.

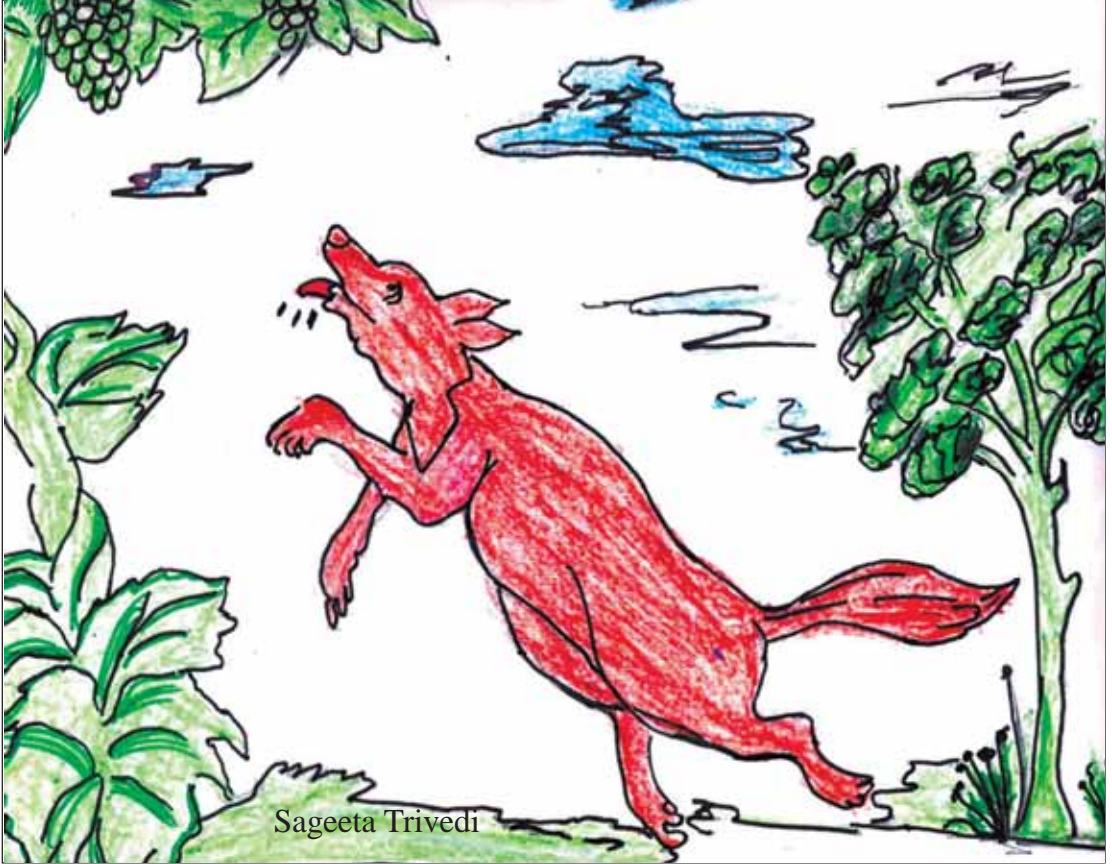
The Temple of the Warriors has thousand pillars sculptured in bas-relief, which have retained much of their original colour. Murals once adorned its walls. It is surrounded by numerous reined building known as the Group of a Thousand Columns.

Cenotes are a common natural formation in Yucatan. Under the earth’s surface are huge dripstone caves filled with ground water. Sometimes the chalky soil breaks away, revealing a view of and access to the depths below. The Cenote of Sacrifice was reserved for rituals related to human sacrifice for pleasing the rain god.

*56, Nagin Lake  
Peeragarhi, Delhi-110085*

# Look Before You Leap

Manas Ranjan Samal



Once there was a tiger in a jungle. He was suffering from high temperature. His family doctor, the old hare had prescribed him to take the young fresh blood of a fox. The tiger had become old, lost his teeth and was very feeble, helpless and weak. Hunting had almost become impossible on his part. He was dependent upon his own fate and had

been staying near a pond in the dense forest. By chance only that he could hunt any animal while they came near the pond, else remained without food.

A young fox with a sound physique came regularly to drink water in the pond. The tiger wanted to taste the soft flesh of the fox. Everyday he tried to entrap the fox telling him soft words

about the old friendship with his father that they were bosom friends. “He used to visit my place with your mother almost everyday. He could sing in a very sweet voice and possessed a very good health. In his memory, I have preserved his violin which he used to play. You do not know how many animals we have killed in our youth and earned uncountable sins. That was the reason

why your father, my wife and all my sons have died. There is no one left whom I can call my own. So I am leading a pious life here at the advice of a prophet and bathe early in the morning in the river Ganga. I have become vegetarian and worship every morning.”

The fox was very clever and did not come near the haunting tiger. There lived a monkey in the forest, a close





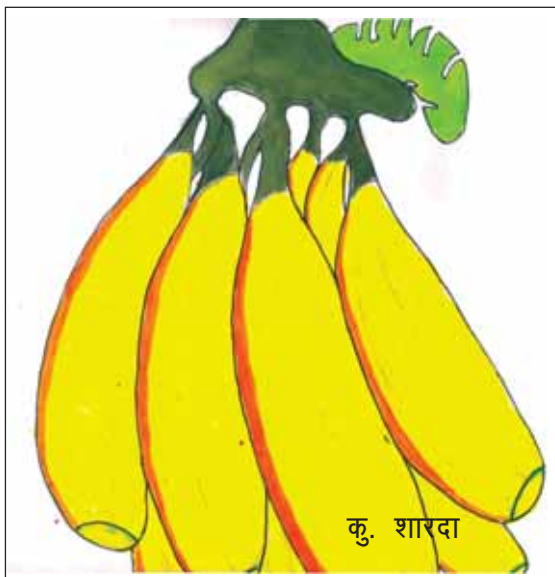


friend of the tiger. The tiger revealed the hidden agenda to his friend. Friend in need is a friend indeed. The monkey hit upon a plan and asked the tiger to sleep over a narrow canal and cover his body with green leaves and flowers so as to present false view of a bridge. The tiger followed the idea in toto. In the meanwhile, the monkey went to invite the fox and told him that a new bridge had been constructed and was being inaugurated by the elephant. “As you had been to your uncle’s house, so please do visit it today at any cost.”

But the fox smelt a rat. From a distance, he watched whether it was a real or fake bridge. The tiger on the other hand could not stop its tail from trembling with joy, at the prospect of catching the fox. As a result, many of the green leaves and the flowers covering the tiger’s tail tumbled and fell down. Now the tail could be seen from a distance and the clever fox came to know about the plan of the monkey. The tiger fled away. From that day, he never came near the pond.

*144-Govt. HB Tenement  
Charbatia-754028, Cuttack (Odisha)*



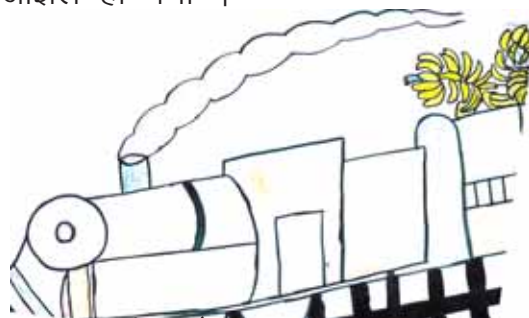


केला! केला! केला!! जैसे ही कोमल के कानों में यह आवाज गूंजी वह हड़बड़ा कर उठी और पापा और किशोर को जगाते हुए बोली: उठो-उठो, हाजीपुर आ गया। पापा ने उठ कर खिड़की के बाहर नजर दौड़ाई।

ट्रेन हाजीपुर स्टेशन पर खड़ी थी और रात के एक बज रहे थे। इतनी रात में खिड़की के बगल से, 'केला! केला! हाजीपुर का मीठा-मीठा केला!' बोलते हुए एक केला वाला गुजरा। कोमल पापा से बोली, पापा केला! पापा ने केले वाले को बुलाया और उसके दाम पूछे। उधर किशोर केले के बारे में जानने के लिए उत्सुक था।

कोमल पूछ बैठी: अंकल! हाजीपुर में कौन-कौन से केले होते हैं। केले वाला बोला : "मुढीया-यह पकने पर गुड़ से भी मीठा होता है। चिनीया- दो खाओ मस्त हो जाओ। बतीसा- सब्जी के काम आये, वाह! इसका चोखा, चटनी, सब्जी, बरफी और रोटी बहुत स्वादिष्ट बनती है। "अंकल हाजीपुर का केला नामी क्यों है," कोमल पूछ बैठी। "क्योंकि गंगा के किनारे इसके उपज के लिए उपयुक्त जल तथा मिट्टी होती है" केले वाला दोहराया। "और एक बात बच्चों-यहां केले के थमों के रेशे से कपूर बनाने का काम भी शुरू हो गया है।"

पापा ने दो दर्जन केला लेते हुए पैसे थमाये। तभी ट्रेन ने सीटी दे दी। केले वाला 'केला!' केला! कहते हुए आंखों से ओझल हो गया।

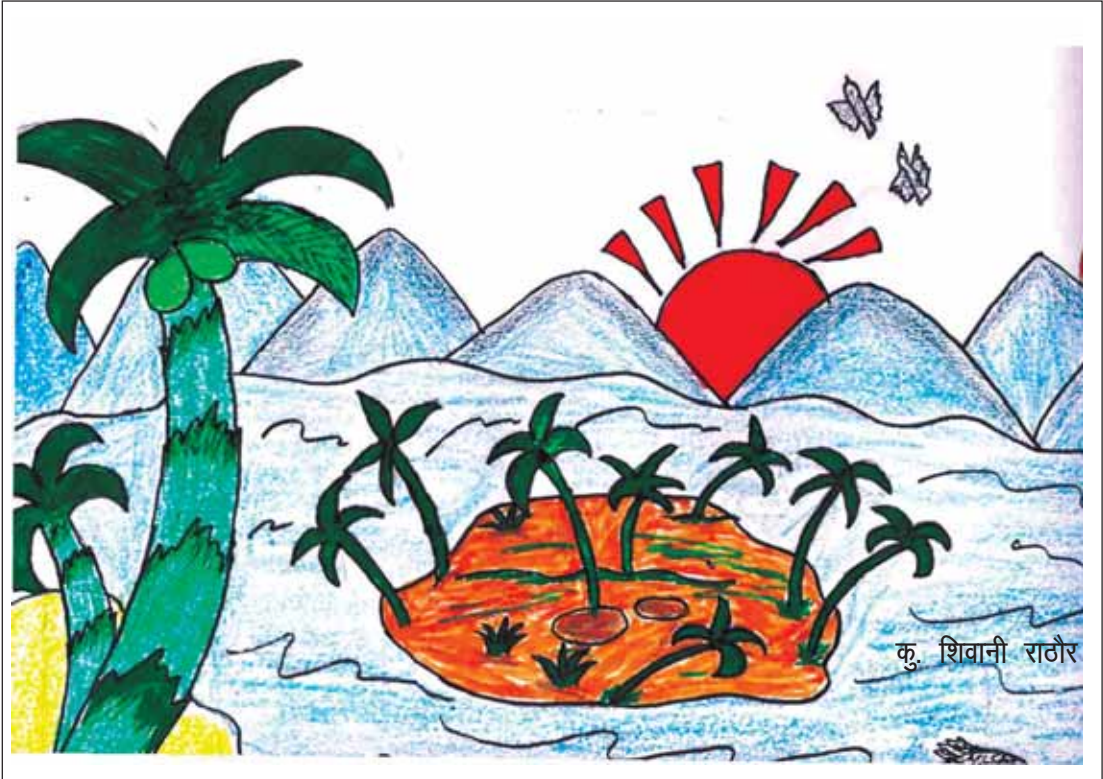


रुबी राठौर

संतपाल स्कूल  
हाजीपुर (बिहार)

# प्रकृति की गोद में धधकता द्वीप

डा. मंजू नायर



अन्डमान निकोबार के रमणीक द्वीप प्रकृति प्रेमियों की कीड़ास्थली है। वैसे तो 572 टापुओं की लड़ियों में सभी द्वीप अपने प्राकृतिक छटा के लिए विश्वविख्यात हैं। लेकिन इन दृश्य प्रिय हरीतिमा ओढ़े द्वीपों में एकमात्र द्वीप ऐसा भी है जो धधकता है और विस्फोट करके जन-जन को यह विदित कर देता है कि पृथ्वी की आन्तरिक मोम तुल्य अवस्था वास्तव में कैसी है ।

भारत की एकमात्र ज्वालामुखी की उपाधि से सम्मानित बैरन द्वीप की यात्रा मुझे अनोखी लगी। वैसे तो प्रायः सभी द्वीप काफी मनोहारी हैं लेकिन ज्वालामुखी जिस पर आबादी नहीं है, यात्रा अद्भुत लग रही थी। बैरन द्वीप एक सक्रिय ज्वालामुखी को अवस्थित करता है। पोर्टब्लेयर द्वीपों की राजधानी है और पोर्टब्लेयर से 6 से 7 घंटे में जलयान द्वारा द्वीप की दूरी तय की जा

सकती है। आज से दो वर्ष पूर्व तक ज्वालामुखी सुशुप्त थी और जलयान यात्रा संभव थी इसलिए मौका पाकर द्वीप तक पहुंचने का प्रक्रम प्रारंभ हुआ।

ज्यादातर यात्राएं रात्रि में आयोजित होती हैं व सुबह के धुंधलके तक द्वीप के समीप पहुंचा जाता है। रात्रि का सफर आरामदायक था। मन में उमंग व उल्लास था कि सूर्य रश्मि के फूटते ही ज्वाला द्वीप का दर्शन होगा। सुबह के 4 बजे से ही जहाज में हलचलें शुरू हो गई। सभी द्वीप के समीप पहुंचने के खबर से काफी प्रसन्नचित थे और किसी नायाब खोज पर निकले वैज्ञानिक की भांति नाविकों से ज्यादा से ज्यादा जानकारी द्वीप के सन्दर्भ में ले रहे थे।

तभी हमारा जहाजी बेड़ा द्वीप से करीब 100 मी. की दूरी पर लंगर समेत ठहर गया। रास्ते में हमने कोरलो से अटी पड़ी नन्हे बिखरे द्वीपों को देखा, बंगाल की खाड़ी में डोलती डोलफिनों को देखा जो समूहों में सागर सतह पर फुदक रही थीं। अन्डमान सागर की तेज तर्रार शार्क मछली के भी दर्शन हुए। लेकिन अत्यंत लुभावने लगे धुंधलके में दमकते हुए रंग-बिरंगे मनोहारी प्लकंटनों की प्रजातियां जो समुद्री जल में सतरंगी रोशनी बिखेर रहे थे और लहरों के साथ आंख मिचौली खेल रहे थे।

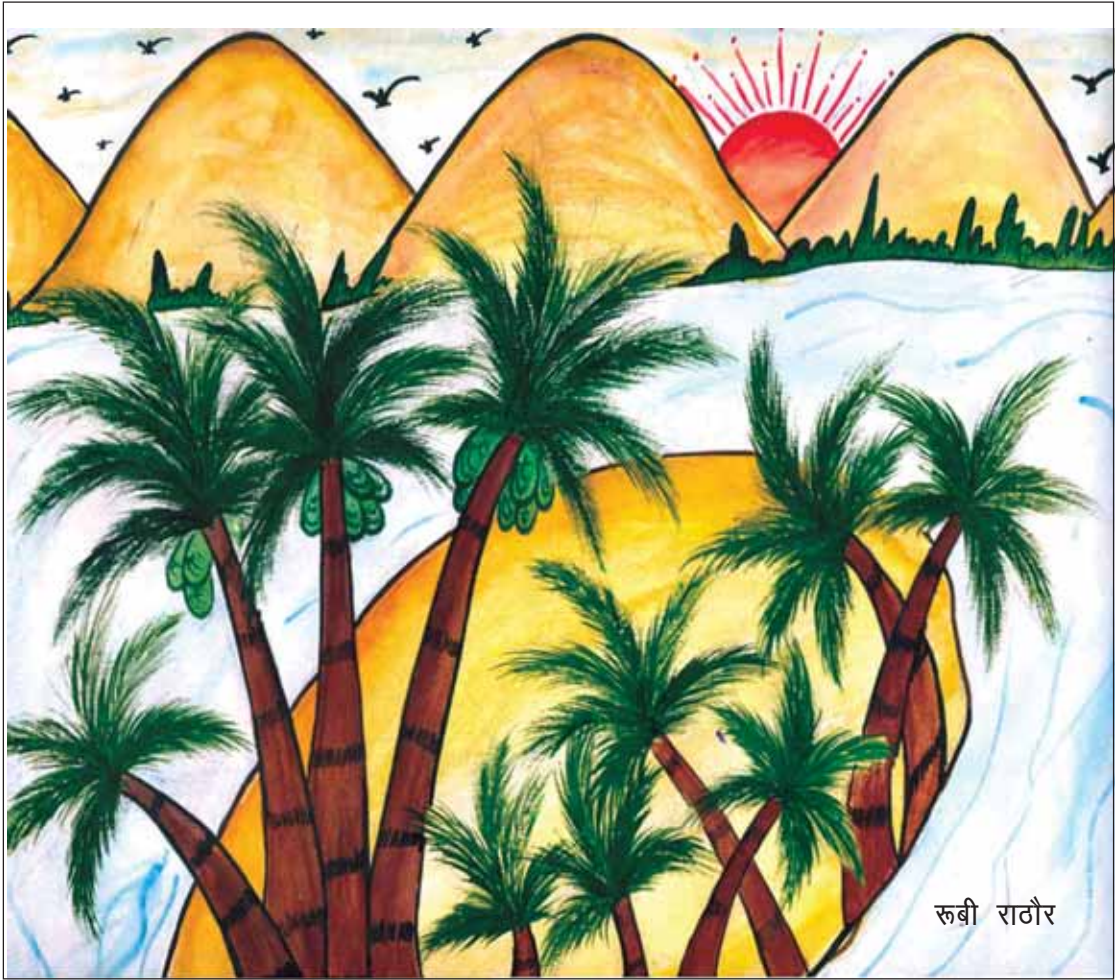
इन सबके बीच सूर्य रश्मियों की चमक से धुंधलके में बैरन पर स्थित ज्वालामुखी रह-रहकर धुआं व वाष्प विसर्जित कर रहा था। द्वीप के चारों ओर हरियाली थी पर बीचोंबीच शंकुओं की कतारें लगी थीं, लावा की बिखरी चट्टानें समुद्र तक लकीर के समान खिंची चली आई थीं। हमारे जहाज का कप्तान, बंगाल की खाड़ी में जहाज चलाने में माहिर, आज ईश्वर की वंदना कर रहा था कि आज लहरें शांत रहें। यदि अनायास ही प्रखर लहरें, सूर्य की रोशनी की गर्मी व बैरन द्वीप की गर्मी से उत्तेजित व उद्वेलित होगी तो द्वीप पर उतरना संभव नहीं होगा। सहयात्री लाइफ जैकेट को पहनने की प्रक्रिया से वाकिफ हो रहे थे।

जलयान पर बंधा लाइफ बोट पानी में उतारा गया और चार-चार यात्रियों को छोटी सी लाइफ बोट पर सवार करके द्वीप तक पहुँचाने का प्रक्रम प्रारंभ हुआ। जिंदगी में पहली बार लाइफ जैकेट हाथ में थमाया गया। उसे पहनते-पहनते जीवन की रक्षा के कदमों को सराहते हुए, मैंने अपने सहयात्रियों को साहस के साथ जहाज से लाइफ बोट पर छलाँग लगाते देखा, तो खुद भी साहस बटोरा और अपने टर्न के इंतजार में मैंने जहाज के कप्तान से बातचीत की कोशिश की।



मैंने कहा आप सौ मीटर की दूरी पर क्यों रुके हो, जरा नजदीक हो तो लाइफ बोट की सवारी टाली जा सकती है । उन्होंने कहा ज्वालाद्वीप के समीप बेड़े को रोकना दुर्घटना को आमंत्रित करने के समान होगा और ज्वाला द्वीप के चारों ओर कई समुद्री जीव व पादप भी निवास करते हैं जो जहाज की चपेट में आ सकते हैं। “वैसे पूरे

द्वीप के चारों ओर एक चक्कर जरूर लगेगा”। मैंने देखा हरे-भरे द्वीपों की श्रृंखला में बैरन कुछ हिस्सों पर तो हरी है अन्यथा लावा के शंकुओं से ढकी है। जहाँ-तहाँ वृक्ष के जले टूट खड़े हैं व टहनियाँ व बिखरे सूखे पात, विनाश का दिग्दर्शन करवाते हैं। चारों तरफ नीली छतरी ओढ़े गगन का वैभव व जलधि की विस्तृतता थी, उस पर अपना बेड़ा लहरों



रुबी राठौर





के प्रवाह में डोल रहा था रह रहकर बड़ी बड़ी लहरें जहाज से टकराती फिर लाइफ जैकेट पहनकर लाइफ बोट पर सवार होकर इस गर्म वातावरण वाले द्वीप पर कदम रखना वास्तव में अनहोनी सा प्रतीत हो रहा था । प्रकृति हवाओं व लहरों का साथ रहा और हम सभी द्वीप पर कदम रख पाए। सूती-वस्त्र, पैरों में मोटी सोल के जूते, जीवनरक्षक जैकेट पहनकर तो सही मायने में लग रहा था कि हम किसी खोज पर निकले हों ।

जैसे ही किनारे पर हमने कदम रखा गर्म जल ने हमारा स्वागत किया। चट्टानों की दरारों से ऊष्मा की उष्मल अनुभूति हो रही

थी । रह रहकर उड़ते वाष्पकण जैसे हमारा स्वागत कर रहे हों। एक अद्भुत अनुभूति। ज्वालामुखी के मुख क्रेटर पर झील बना है तथा सतह पर सल्फर तत्व का जमाव भी है ।

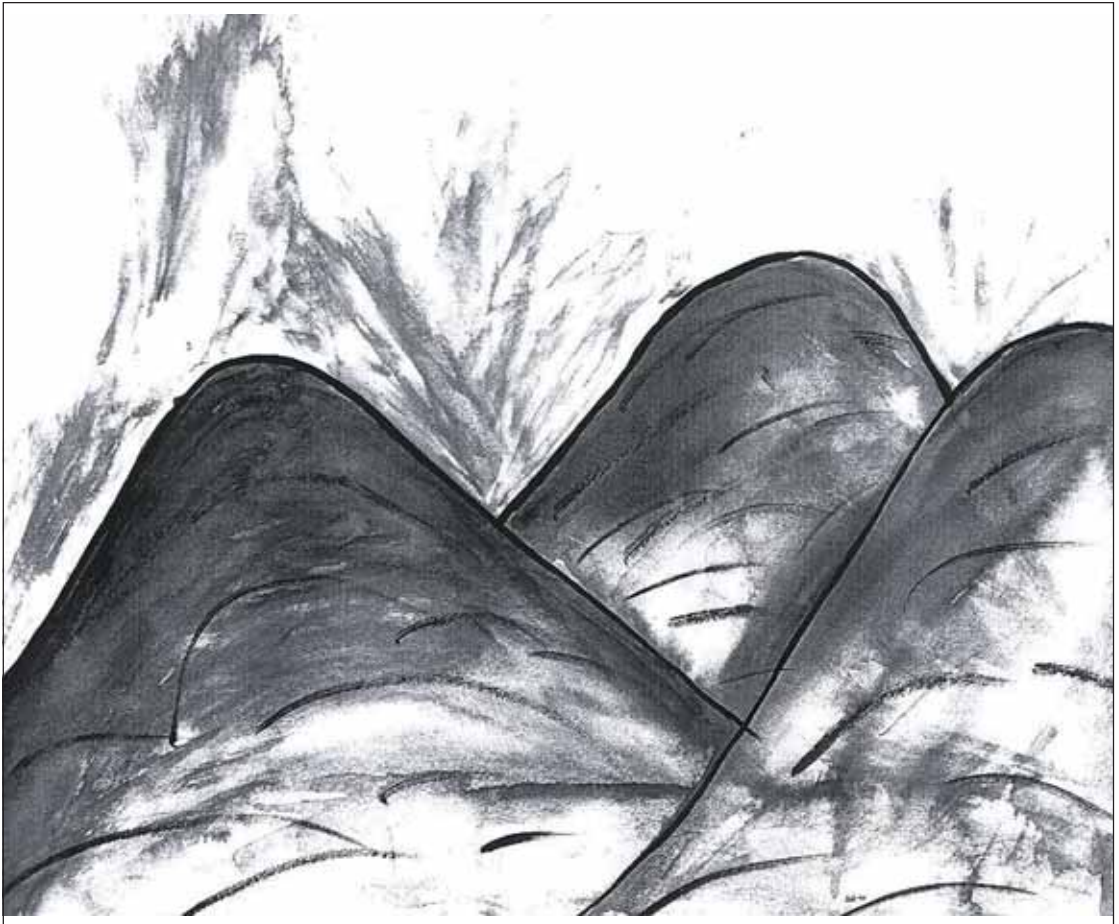
वर्तमान समय में बैरन द्वीप भारत सरकार द्वारा घोषित वन्य प्राणी सैन्युरी है । द्वीप में आजकल उद्भेदन की अधिकता के कारण यात्रियों को दूर से ही द्वीप का दर्शन करवाया जाता है क्योंकि हलचलों व विस्फोटों के कारण पूरा वातावरण धूल धूसरित है तथा गर्म लावा प्रवाह व आग के शोलों के कई मी. ऊंचाई तक विस्फोट के कारण पूरा वातावरण

गर्म है और द्वीप पर उतरना किसी भी खतरे से खाली नहीं है । वैसे भी आग उगलती ज्वालामुखी पूरे वातावरण में अद्भुत आभा बिखेरती है । हर शुक्रवार को पोर्टब्लेयर से जलयान बैरन द्वीप के लिए चलती है । द्वीप धरती के पाताली प्रवृत्तियों व अव्ययों को सबके समक्ष धुएँ, मवाद तथा आँच के रूप में प्रकट करती हैं। अपितु उद्गार व उद्भेदित पदार्थ विस्मयकारी हैं लेकिन ऐसे लगता है

जैसे यह आँच व ताप शारीरिक पीड़ा को सहने की क्षमता रखता हो ।

इस प्रकार भारतीय उपमहाद्वीप के एकमात्र ज्वालामुखी से कोई भी परिचित हो सकता है और प्रकृति के अनूठे संरचना के पहलुओं की विशालता को ग्राह्य कर सकता है ।

347 एम.बी.सुपर प्लस ऐजेंसी  
जंगलीघाट-744103, पोर्टब्लेयर (अडमान निकोबार)



# चिड़ी और चिड़ा

के. आर. शर्मा



एक थी चिड़ी । एक था चिड़ा । चिड़ी बोली—चलो झूला झूलते हैं ।

चिड़ा और चिड़ी ने मिलकर नदी किनारे झूला बनाया । पहले चिड़ी झूली फिर चिड़ा । फिर चिड़ी झूली । फिर चिड़ा । चिड़ा झूलने लगा तो झूला टूट गया । चिड़ा नदी में गिर गया । चिड़ी रोने लगी ।

उधर से निकला गाय वाला । चिड़ी गाने लगी—

गाय वाले भई गाय वाले, मेरे चिड़े को निकाल दे ।

गाय वाला बोला, मेरी गाय भाग जाएगी ।





उधर से बकरी वाला निकला । चिड़ी गाने लगी— बकरी वाले, भई बकरी वाले मेरे चिड़े को निकाल दे । बकरी वाला बोला, मेरी बकरी भाग जाएगी ।

उधर से निकली एक डोकरी । चिड़ी गाने लगी— डोकरी मां ओ, डोकरी मां ओ, मेरे चिड़े को निकाल दे । डोकरी मां बोली—

मैं घर में दाल चढ़ाकर आई हूं, दाल जल जाएगी ।

फिर उधर से आई बिल्ली मौसी । चिड़ी फिर से गाने लगी— बिल्ली मौसी ओ, बिल्ली मौसी ओ, मेरे चिड़े को निकाल दे ।

बिल्ली बोली, निकालूं तो पर खाऊं । चिड़ी बोली—खा जाना । बिल्ली

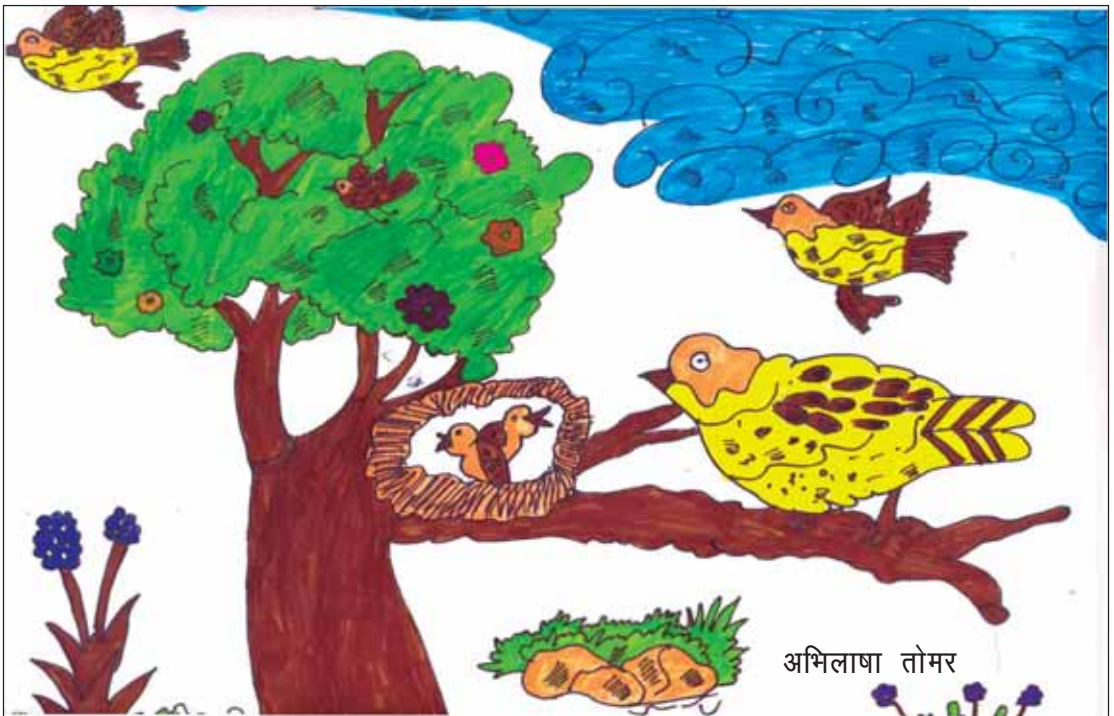
बोली—खाऊं! चिड़ी बोली—अभी चिड़ा गीला है, सूखने तो दे ।

बिल्ली बोली—खाऊं! चिड़ी बोली—चिड़े को आराम तो करने दे । बिल्ली बोली—खाऊं!

चिड़ी बोली—चिड़े को थोड़ा चूग तो लेने दे ।

चिड़ा हो गया फुर्र । चिड़ी और चिड़ा डाल पर बैठ गए । चिड़ी और चिड़ा गाकर बोले— टुगूर—मुगूर क्या देखे, खाना था तो पहले ही खा जाती ।

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन  
26, बलवीर रोड  
देहरादून (उतराखंड)





## जंगल का नया साल

कमलसिंह चौहान

तितली फूलों पर मंडराती  
चिड़िया चीं चीं करके गाती  
नये साल का सूरज निकला  
प्यारी धरती सबको भाती

शेर हाथी सियार चीता  
समय के आगे कोई नहीं जीता  
सबने मिलकर मीटिंग बुलाई  
संग परिवार के पोता नाती

जंगल का राजा भी दहाड़ा  
दावत में आये भैंस पाड़ा  
भैंसों ने दूध से कढ़ाई भर दी  
सबको खीर रबड़ी भाती

भोलू ने फिर ढोल बजाया  
हाथी ने लड्डू पापड़ खाया  
गले मिले सब जंगल भाई  
नये साल की खूशबू छाती ।

## एक और अनेक

अनन्या मोहन



एक अल्लाह है  
एक पृथ्वी है  
एक चांद है  
एक सूरज है  
एक जिन्दगी है

धर्म अनेक हैं  
आखिर क्यों?

★ ★ ★ ★

कविता निवास  
दुर्गा मंदिर के पास, रेलवे स्टेट रोड, बीड़  
खण्डवा-450110 (म.प्र.)

एल.पी-61/बी, पीतमपुरा, दिल्ली-110085

# पहेलियां

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'

1.

रूठी मान गई जब मुन्नी  
वह आई, वह आई  
लहक-चहक कर पूरे घर में  
रौनक बन कर छाई

है जुड़वा पर इक दूजे को  
कभी देख ना पायें  
नहीं है जूते, ना दस्ताने  
क्या हैं बूझ बतायें।

आती-जाती रहती, फिर भी  
लगती सबको अच्छी  
नहीं है बिजली, नहीं हवा है  
क्या बच्चों की सच्ची।

2.

अच्छे लगते बच्चों को ये  
मांगे नाना-नानी  
फिसला किसे गिरायें, जाने  
किसकी है नादानी

सर्दी आते, गर्मी आते  
ले लो हाथ बढ़ाओ  
नहीं टमाटर, नहीं है आलू  
क्या हैं जल्द बताओ?

3.

अच्छा गाना सुन खुश होते  
हों गाली से लाल  
हंसी-खुशी की बातों पर ये  
कैसे हुए निहाल



शगुप्ता खानम

उत्तर- हंसी, केले और कान

ए 20/4, फेज 1, डी.एल.एफ.  
सिटी, गुडगांव-122002 (हरियाणा)

## Book Review

### Two interesting books from CBT

#### The King and the Monk



He is shrewd. He is ambitious. He is mighty. Yet, the Bactrian King craves for more. More Battles....more spilling of blood...."Power makes a man arrogant.." "But is it not a king's duty to expand

his kingdom..?"

Caught in a dilemma Menander gets impatient. Still something about the Buddhist monk arrests his attention. Years later they meet again, the king in battle dress, the monk in saffron robes and they walk together...among the dead, the dying and the wounded.

"Alas!" says the monk, "they died only to satisfy an ambition... your ambition..."

Both fell silent. In the distance Menander can hear the chanting of Buddhist hymns... Would these impact his future?

A very interesting story with exquisite illustrations.

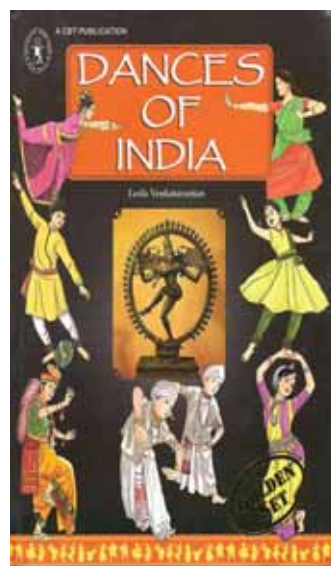
#### **The King and the Monk**

A. K. Ghosh

Children's Book Trust

**Rs 60/-**

#### Dances of India



The Indian classical dance, a heady combination of traditional storytelling, physical art and musical compositions is a distinguished visual art form that impacts the audience through its abhinaya, rasa, attire and ornaments.

Captured within the pages of this book is the essence of various dances explained in a manner only a great guru can tell.

#### **Dances of India**

Leela Venkataraman

Children's Book Trust

**Rs 110/-**

# नव वर्ष मंगलमय हो! **HAPPY NEW YEAR!**

